International Journal of Applied Research 2019; 5(7): 466-468

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(7): 466-468
www.allresearchjournal.com
Received: 20-05-2019
Accepted: 21-06-2019

मधु सिंह
यू. जी. सी. नेट (दर्शनशास्त्र)
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया,
बिहार, भारत

Correspondence
मधु सिंह
यू. जी. सी. नेट (दर्शनशास्त्र)
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया,
बिहार, भारत

शिक्षाः हमारी दृष्टि

मधु सिंह

प्रस्तावना

''शिक्षा सबसे ताकतवर हथियार है, जिसका इस्तेमाल आप दुनिया बदलने के लिए कर सकते हैं।''
नेल्सन मंडेला का यह उक्ति हमें बताती है कि शिक्षा का महत्व हमारे जीवन में कितना अधिक है। शिक्षा का भारत में ऐतिहासिक रूप से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन भारत में पुरोहित वर्ग ज्ञान प्राप्त करने के लिए अध्ययन करते थे, जबकि क्षत्रिय एवं वैश्य विशिष्ट उद्देश्यों के लिए जैसे युद्वकला अथवा व्यापार सीखने के लिए अध्ययन करते थे। प्राचीन शिक्षा प्रणालियों का उद्देश्य जीविकोपार्जन के साथ चरित्र निर्माण था। विदेशों से उच्च शिक्षा हेतु आने वाले छात्रों के लिए भी भारत शीर्ष स्थल था। सबसे बड़े शिक्षा केन्द्रों में से एक नालंदा में ज्ञान की सभी शाखाएं भी और अपने चरमोत्कर्ष काल में उसमें 10,000 तक छात्र रहते थे।
आजादी के बाद नीति निर्माताओं ने अंग्रेजों द्वारा निर्मित कुलीनतावाली शिक्षा प्रणाली को जन सामान्य की उस शिक्षा प्रणाली में बदलने के लिए कठिन परिश्रम किया, वो समानता एवं सामाजिक न्याय के सिद्वांतों पर खड़ी थी। वर्ष 2009 में शिक्षा के अधिकार का विचार देते हुए इसे मौलिक अधिकार बना दिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषण भी की गई। उसके बाद से नीति निर्माताओं ने सर्वशिक्षा अभियान और मध्यान भोजन योजना जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सभी को शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास किया है।
लेकिन शिक्षा से आज भी कई लोग वंचित हैं कितने लोगों के लिए अभी तक सपना ही बना हुआ है विशेष कर सुदूर एवं ग्रामीण दोनों में रहने वाले लोगों के लिए, जहाँ स्कूल की इमारत नहीं होती अथवा बारिश या बर्फवारी होने पर स्कूल पहुंचने की संभावना भी नहीं होती। आदिवासियों, हाशियों पर धकेले गए लोगों, अनुसूचित जाति एवं जनजाति को शिक्षा की उचित सुविधा उपलब्ध करना उन्हें राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शामिल करने का प्रयास कर रहे नीति निर्माताओं के लिए चिंता का बड़ा विषय है दुर्गम स्थानों पर स्कूल होने के कारण तथा ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के लिए शौचालयों की कमी के कारण सुरक्षा संबंधी चिंता पैदा होती है, जिसके परिणामस्वरूप स्कूल छोड़ने वालों की दर खतरनाक स्तर तक पहुंच गई है। शिक्षा हमारी विकास के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखता है इसके लिए हमें शिक्षा संबंधी योजना बनाते समय उन बच्चों को भी याद रखना होगा, जिन्हें विशेष देखभाल की जरूरत है या जिनकी विशेष आवश्यकता है।
''यदि ज्ञान केवल ज्ञान ही रह जाए तो व्यक्ति के पास जीने की कोई उम्मीद नहीं रह जाती लेकिन यदि वह ज्ञान को बुद्धि में बदल दे तो न केवल वह जीवित रहेगा बल्कि उपलब्धियों की नई से नई ऊँचाईयों को प्राप्त करने के योग्य हो जाएगा।''[1]
प्रत्येक सभ्यता और प्रत्येक धर्म ने अपनी–अपनी परंपरा, नियम और जीवन पद्वति का विकास किया है, वो लोगों को उनके जीवन और आजीवन की पद्वति, व्यवहार के मानदंड और मानव सकानीकरण के सूत्र में एकसाथ बाँधे रखता है शिक्षा ही एक ऐसा शस्त्र है जिसके द्वारा मनुष्य को धर्म, जाति से उठकर एक मानवता में लाया जा सकता हैं। शिक्षा का उद्देश्य, चाहे जिस किसी भी तरिके से इसे तैयार किया गया हो, उसका स्तर एक ही होता है, यह मनुष्य बनाने वाली शिक्षा होनी चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ''शिक्षा मनुष्य में पहले से ही उपलब्ध पूर्णता की अभिव्यक्ति है।''[2]
इस तरह विवेकानन्द थोड़े से शब्द में ही मानव जीवन की समस्या, इसके लक्ष्यों, उद्देश्यों, प्रक्रिया आदि उत्पाद की बात कह पाते है।
रविन्द्र नाथ टैगोर कहते हैं'' उच्चतम शिक्षा वह है जो न केवल हमें सूचनाएँ देती हैं बल्कि बाकी दुनिया के साथ हमारे जीवन का तालमेल बिठाती है।[3]
1909 में महात्मा गाँधी ने 'हिन्द स्वजराज्य' लिखी थी और उसमें उन्होंने शिक्षा की परिभाषा दिये थे, उसमें भी मानव निर्माण को ही शिक्षा का उद्देश्य बताया गया है उन्होंने लिखा है– ''मैं सोचता हूँ कि मनुष्य की शिक्षा उदार होनी चाहिए। युवाओं में उसका विकास इस प्रकार से किया जाना चाहिए

कि उसका शरीर उसकी इच्छाओं के अधीन हो और एक संरचना के तौर पर वह सहजता भी खुशीपूर्वक से सभी कार्य को जिनके लिए वह सक्षम हो, जिसकी बुद्धि एक ऐसी स्पष्ट, शांत, तर्क हों उसके सभी पूजे समान रूप से मजबुत हों और सही प्रकार से कार्य करते हों– जिसका मस्तिष्क प्रकृति के आधारभूत सत्यों के ज्ञान से भरा हो..... जिसके जोश को सशक्त इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रशिक्षित किया गया हो, नवीन चेतना का अनुयायी जिसने सभी तरह की दुष्टता से घृणा करना और अपनी तरह ही दूसरों को सम्मान देना सीखा हो मैं मानता हूँ कि केवल ऐसे ही व्यक्ति के पास उदार है, दूसरे किसी और व्यक्ति के पास नहीं, जिसके लिए वह प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। ऐसे स्त्री और पुरूष एक दुसरे को बेहतर बनाने का प्रयास करेंगे।''[4]

इस प्रकार की शिक्षा की खोज पूरी दुनिया में लगातार की जा रही है और यह अपने आप में सभ्यता के प्रगति और विकास को एक बहूत ही प्रोतसाहित करने वाला लक्षण है।

हक्सले ने शिक्षा के संबंध में कहते हैं– ''इस संसार को पूर्ण रूप से जानने के बाद हम पाते हैं कि सुविकसित और सुगठित व्यक्ति विकास का सर्वश्रेष्ठ उत्पाद है।''[5]

शिक्षा जो हम पा रहे हैं उसमें अच्छा अंश बहुत ही कम और बुराईयाँ बहूत है इसलिए उसकी बुराईयाँ उसके भले अंश को पचा जाती है। सबसे पहली बात तो यह है कि यह शिक्षा मनुष्य बनाने वाली नहीं कही जा सकती है शिक्षा सिर्फ जानकारी बटोरने की चीज नहीं है इस संबंध में विवेकानन्द कहते हैं कि केवल जानकारी का वह ढेर शिक्षा नहीं कहला सकता जिसे तुम्हारे दिमागों में ठूँस–ठूँस कर भर दिया जाता है और जो आत्मसार हुए वहाँ जीवन भर उपद्रव मचाया करता है। हमें विचारों को इस प्रकार आत्मसाल कर लेना चाहिए कि उनके द्वारा हमारा जीवन निर्माण हो सके, हमारा चारित्रिक गठन हो सके और हम मनुष्य बन सके। यदि तुम केवल पाँच ही भावों को आत्मसात कर तदनुसार अपने जीवन और चरित्र का गठन कर सको तो उस मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक शिक्षित हो, जिसने एक पूरा का पूरा पुस्तकालय कण्ठस्थ कर रखा है।

भौतिकवादीता के इस विकास में हम मूल्यहीन विकास की ओर जा रहे हैं जहाँ व्यावहारिक रूप से प्रकृतिक जलाशयों, नदियों को समाज कर दिया है और इस धरती पर नदियो में सबसे अधिक पुजनीय माँ गंगा को भी नहीं छोड़ा हैं क्या यह मूलयों के क्षरण की ओर इशारा नहीं करता है जो अब मानव की जाति के अस्तित्व पर ही संकट बन गया। इस दिशा में तभी बात होगी जब हम शिक्षा के माध्यम से हम शरीर, मस्तिष्क और भावना से सर्वश्रेष्ठ निकालकर बाहर आएँगे, सोच, क्रिया और कार्य के जरिए विकास के मार्ग पर समग्र व्यक्तितव विकास के लिए परिवार, समुदाय और शिक्षा के स्तर पर पहल करेंगे।

शिक्षा हमारे अंदर पूर्णता पैदा करती है और द्वेष और अपने पराये के भेद मिटाते हैं

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि
शुनि चैव श्वपाके च पण्डितः समदर्शिनः [6]

समाज में हमें एकता के साथ मिलजुल कर रहना चाहिए तभी हम देश के आगे विकास कर सकते हैं

''जहाँ सुमति वहाँ सम्मति नाना
जहाँ कुमति तहाँ विपति निद्याना [7]

शिक्षा हमें कर्म करने की बात करती है श्री कृष्ण भगवान कहते हैं –

कर्मण्येवाधि कारस्ते मा फलेषु कदाचन
मा कर्मफल हेतु भूर्मा ते संगोऽस्त्वर्कमणि [8]

शिक्षा हर वर्ग के लिए आवश्यक है देश का विकास तभी होगा जब शिक्षा देश के हर नागरिक को मिले इसलिए शिक्षा के लिए व्यापक योजना बनाकर उसे कारगर सिद्ध करने की कोशिश हम सब को होगी इसके लिए बच्चों की स्कूली शिक्षा बाते रखने और उन्हें स्कूली पढ़ाई अधूरी छोड़ने से रोकने के लिए सरकारें, स्कूलों और समुदायो के लिए यह बहुत आवश्यक है कि समस्त बच्चों विशेषकर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाती पृष्ठभुमि से आने वाले बच्चों को स्कूल में भेदभाव रहित वातावरण उपलब्ध कराएं।

शिक्षा के प्राथमिक और बाद के स्तरों पर दाखिला लेने तक सीमित न रहकर उनसे आगे जाए। स्कूल जैसे ही उल्लास और व्यापक रूप से सीखने की जगह बने, वह इन वर्गों के बच्चों को शिक्षा के उच्च स्तरों तक पहुंचने में सहायक रहेगा, जिससे उनका शिक्षित काम बाजार में समावेश सुनिश्चित हो सकेगा।

शिक्षा कोई समय के साथ बदलने वाली चीज नहीं है प्रशिक्षण अवश्य समय के साथ बदलता हैं नई तकनीकों के साथ प्रशिक्षण भी बदलता रहता है परंतु शिक्षा हमेशा स्थिर रहती है यदि सच बोलना चाहिए, तो यह हमेशा के लिए लागू होता है ईमानदारी हरेक समय में अपेक्षित होती है समाज और देश के हित में कार्य करना हरेक कालखण्ड में आवश्यक होता है इससे शिक्षा के जो मापदंड, स्वरूप और नीतियां भारत के मनीषियों ने निर्धारित की थी, वे आज से पाँच हजार वर्ष पहले भी प्रासंगिक थी और आज भी प्रासंगिक है। आवश्यकता है उन्हे पढ़–समझकर उनका समूचित उपयोग करने की।

गाँधी जी– '' सच्ची शिक्षा वही है जो मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाये, उसके समग्र विकास में योगदान दे और उसे कर्तत्य–पालन के लिए प्रेरित करे–[9]

शिक्षा के संबंध गाँधी का कहना था की – ''मैं बालकों के हाथों का, मस्तिष्क का और हृदय का विकास करूंगा।[10]

शिक्षा मनुष्य को मजबूत बनाती है देश के विकास में सहयोग देती है इस संदर्भ में कहा जाता है कि शिक्षा से तात्पर्य विकल्पों के निर्माण, लोगों को इन विकल्पों के प्रति जागरूक करना और उन्हें इन विकल्पों के उपयोग के योग्य बनाता है।

आज हमें फिर से अक्षर ज्ञान के साथ–साथ सदगुणों की क्रियात्मक शिक्षा देन की जरूरत है जिससे वह सांसारिक जीवन में अपनी बड़ी कठिनाइयों से संघर्ष कर सके।

शिक्षा न केवल ज्ञान विज्ञान से संबंधित होनी चाहिए, वरन इसमें नैतिकता, मानवीय मूल्यों एवं सबों के हित के लिए होना चाहिए। तभी हम सर्वांगीण विकास कह सकते हैं।

शिक्षा हमारी जीवन के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। शिक्षा ही वह पूँजी है जिसको प्राप्त कर हमारे अंदर सत्य, ईमानदारी, समदर्शी का भाव आ सकता है। और हमारे अदंर परोपकार भी मानव से हम अपना हित के साथ जगत का हित कर सकते हैं सभी जीव सुखी पूर्वक इस जगत में रह सकते हैं।

वस्तुतः हम कह सकते हैं कि मानव जगत सृष्टि की उतक्रष्तम रचना हैं यह अपने आरंभिक काल से ही अपनी उन्नति एवं सुख–शांति के लिए प्रयत्नशील रहा। इस प्रयत्नशील में उसने जिस शक्ति को अपना आधार बनाया उसके अमून रूप को ज्ञान एवं मूल रूप को शिक्षा कहते हैं। शिक्षा के कारण ही मानव समाज की उन्नति हुई हैं। वस्तुतः शिक्षा के बिना न तो मनुष्य को अपने कर्तव्यों का ज्ञान होता है और न ही उसकी आंतरिक एवं ब्राह्य शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा से ही मनुष्य की बुद्धि परिभाषित एवं परिकृष्ट होती है या उसे सत असत् का विशेष होता है। प्राचीन कालीन शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य को पूर्ण ज्ञान प्राप्त कराना था, जिससे वह अज्ञानन्धकार से निकलकर ज्ञान के शुभ प्रकाश को प्राप्त करें।

निष्कर्ष– हमारा ध्येय शिक्षा से हम अपने जीवन को प्रकाशित कर दुसरों के जीवन को भी प्रकाशित करें।

संदर्भ

1. जीबी शॉ, योजना पत्रिका
2. शिक्षा के विविध आयाम स्वामी विवेकानन्द का शिक्षाः अरूण प्रकाशन, दिल्ली
3. शिक्षा में भारतीय दर्शनों का योगदान, नालन्दा खुला विश्वविद्यालय
4. हिन्द स्वराज
5. योजना पत्रिका
6. राष्ट्रीय उत्थान में नैतिक शिक्षा का महत्व, डॉ० महेन्द्र कुमार मिश्रा, पृ० 51
7. वही, पृ० 25
8. गीता, अध्याय–4
9. हिन्द स्वराज
10. महात्मा गाँधी, यंग इंडिया 12 मार्च 1925